

— अनु स. अनुनिघ्न.

— घभि *beschnuppern, beriechen; das Gesicht liebkosend einem Andern nahebringen*: घभिनिघ्नन्ती भुवनस्य नाभिम् RV. 1, 183, 5. घसाविमं वृष्ट्याभ्युनत्यभिनिघ्नति *der Himmel netzt und küsst die Erde mit dem Regen* AIT. Br. 1, 7. आदित्य इमाः प्रजा अभिनिघ्नति ÇAT. Br. 7, 3, 2, 12. 4, 3, 5, 11. वृत्से ज्ञातं गौरभिनिघ्नति TS. 6, 4, 41, 4. gerund. अभिनिघ्न्य Gobh. 2, 8, 22.

— घव 1) *beriechen, an Etwas riechen* VS. 9, 9, 19. TS. 3, 1, 2, 2. ÇAT. Br. 2, 4, 2, 24. 6, 4, 33. घवप्रायात् ÂÇV. ÇR. 10, 8. 5, 6. घवप्रायं निदधाति KÂTJ. ÇR. 5, 9, 15. घवनिघ्ने च तान् M. 3, 218. घवप्रायं BhaG. P. 4, 13, 37. 6, 19, 15. — 2) *mit dem Munde berühren, küssen*: स्त्रियै मूर्धानमेवावनिघ्नति PÂR. GRHJ. 1, 18. मूर्धनि त्रिवद्राया ÂÇV. GRHJ. 1, 15. BhaG. P. 7, 5, 21. घवप्रातश्च मूर्धनि R. 2, 20, 21. — Vgl. घवप्राण. — *caus. beriechen lassen*: अश्वमवप्राययति TS. 3, 2, 3, 7, 1, 6, 6. ÇAT. Br. 4, 5, 5, 5 u. s. w.

— घ्रा 1) *riecken*: येन वा गन्धानाजिघ्रति AIT. Up. 5, 1. ÂÇV. GRHJ. 3, 6. M. 11, 149. MBH. 1, 5933. 3, 11086. MEGH. 21. DHÛRTAS. 77, 16. आघ्रायि वागन्धवहः BhaTT. 2, 10. आघ्रात mit pass. Bed. Suçr. 1, 160, 6. mit act. Bed.: गन्धाघ्रातौ द्विपाविह HARIV. 4478. 3630. — 2) *beriechen, an Etwas riechen*: घ्रा जिघ्र कलशम् VS. 8, 42. BRH. Dev. in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. मूर्धन्याघ्रायते घ्रापदैः Suçr. 1, 110, 4. धूममाघ्राय MBH. 3, 10489. कर्पूरगन्धो मयास्य मुखे प्रत्यक्षेणाघ्रातः HIT. 110, 21. ÇÂK. CH. 63, 14. 112, 3. DHÛRTAS. 90, 9. घनाघ्रातं पुष्पम् ÇÂK. 43. — 3) *küssen*: मूर्ध्नि केशवमाघ्राय MBH. 1, 8000. R. 2, 70, 16. 3, 3, 13. मूर्ध्याजिघ्रत पाण्डवम् MBH. 15, 135. 3, 15135. आजिघ्रमूर्ध्नि बालांश्च चकुम्बुश्च BhaTT. 14, 12. आघ्राय तम् ARG. 2, 10. — Vgl. आघ्राण fgg. — *caus. beriechen lassen* KÂTJ. ÇR. 13, 4, 19. 14, 3, 10. 4, 12.

— उपा 1) *riecken*: उपाघ्राति च यो गन्धाव्रसोश्च पृथग्विधान् MBH. 3, 14304. शवगन्धमुपाघ्राति सुरभिं प्राप्य यो नरः 12, 11716. — 2) *küssen*: तं मूर्ध्याघ्राय ARG. 3, 2. MBH. 2, 23. 3, 1776. R. 1, 4, 9. 17, 29. 28, 34. 77, 4. 3, 18, 28. तदाननम् — उपाघ्राय RAGH. 3, 3. Hierher oder zu उपः (ताम्) उपाजिघ्रत मूर्धनि MBH. 1, 7982. वदनानि सपत्नीनामुपाजिघ्रन्तुनः पुनः R. 5, 14, 25. उपाजिघ्रत च तदा तस्यौष्ठम् MBH. 13, 2650.

— समुपा *küssen*: तं मूर्ध्नि समुपाघ्राय R. 2, 72, 4. समुपाघ्राय मूर्धानम् MBH. 4, 2319. R. 6, 8, 7.

— समा 1) *riecken*: गन्धं समाघ्राय R. 5, 23, 32. — 2) *beriechen, an Etwas riechen* R. 6, 83, 55. MRKKU. 22, 21. — 3) *küssen*: (तम्) समाजिघ्रत मूर्धनि MBH. 14, 2396. कनीयसः समाघ्राय शिरस्सु 1, 5062. 5218. R. 2, 72, 4. तदाननम् — समाघ्राय RAGH. ed. Calc. 3, 3, v. l.

— उद् स. उज्जिघ्न.

— उप 1) *riecken*: ययातिरूपजिघ्रन् (धृम्) वै नियपात मर्दीं प्रति MBH. 5, 4059. ग्रामोदमुपजिघ्रतौ RAGH. 1, 43. — 2) *beriechen, an Etwas riechen*: (पशवः) यदेवोपजिघ्रन्त्यथ ज्ञानति ÇAT. Br. 11, 8, 3, 10. 4, 6, 1, 6. 8. °प्राय LÂTJ. 2, 11, 11. °जिघ्रेन् 17. °प्रेत् 3, 5, 8. उपाजिघ्रत् (kann auch zu उपा gezogen werden) BRH. Dev. in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. गवा चान्मुपघ्रातम् M. 4, 209.

पादौ च ते नामिकयोपजिघ्रते MBH. 13, 4900. सुमनस उपजिघ्रतीम् BhaG. P. 5, 2, 6. या मुखेनोपजिघ्रति *berührt* AV. 12, 4, 5. NIR. 5, 12. — 3) *küssen*: उपजिघ्रेहि मां मूर्ध्नि R. 2, 72, 30. MBH. 7, 4357. मूर्धनि चोपजिघ्रौ RAGH. 13, 70. — *caus. beriechen lassen* TS. 5, 2, 3, 1.

— समुप *küssen*: समुपजिघ्रती कपिराजम् R. 4, 22, 1.

— परि *mit Küssen bedecken*: कर्णस्य वक्त्रं परिजिघ्रमाणा MBH. 11, 616.

— वि 1) *auswitlern*: घ्राणेन पृष्ठ्याः पद्वो विजिघ्रन् BhaG. P. 3, 13, 28. — 2) *riecken*: को वा अमुष्याङ्गिरेजरेणुं विस्मर्तुमीशीत पुमान्विजिघ्रन् BhaG. P. 3, 2, 18. — 3) *beriechen* VARÂH. BRH. S. 88, 15.

— सम् *sich mit Jmd beriechen* (wie Thiere die sich kennen lernen) d. i. *in enge Verbindung treten*; med.: अत्रा सं जिघ्रते पुत्रा RV. 9, 14, 1. — *caus. in enge Verbindung bringen*: तमाकृतमग्निभिः संप्रापयति ÇAT. Br. 12, 5, 1, 13.

घ्राणं (von घ्रा) 1) adj. *gerochen u. s. w., s. u. घ्रा*. — 2) subst. a) *Geruch* (subj.) ÇAT. Br. 14, 7, 1, 24. 3, 17. M. 3, 241. m. BhaG. P. 2, 1, 29. 3, 26, 44. घ्राणेन्द्रिय Suçr. 1, 30, 14. — b) n. *Geruch* (obj.): अग्निष्ट° ÇÂK. GRHJ. 4, 7. न तथा घ्राणयुक्ताश्च सर्वगन्धाः MBH. 3, 12844. — c) n. *Nase* AK. 2, 6, 2, 40. TRIK. 3, 3, 126. H. 580. MED. n. 11. KûIND. UP. 8, 12, 4. MBH. 14, 661. fgg. m. 660. 797. 1123. unbest. ob m. oder n. GÂR. UP. in Wind. Sancara 166. M. 5, 135, v. l. MBH. 1, 6074. HIP. 2, 12. Suçr. 1, 11, 3. 260. 3. 310, 10. 2, 18, 9. SÂMKHJAK. 26. R. 6, 26. घ्राणचक्षुम् adj. *sich der Nase statt des Auges bedienend, blind* MBH. 8, 3443. f. घ्राणा VARÂH. BRH. S. 50, 39. 51, 3. 60, 15 (eines Ochsen). — d) m. N. pr. eines Mannes RÂGA-TAR. 5, 417.

घ्राणतर्पण (घ्राण + त°) adj. *die Nase ergötzend, überaus wohlriechend* AK. 1, 1, 4, 20. H. 1390. गन्धो माधुर्यघ्राणतर्पणः HARIV. 3710. n. *Wohlgeruch*: घ्राणतर्पणामन्येत्य कं नरं न प्रकुर्येत् R. 2, 94, 14. RÂGA-TAR. 3, 356.

घ्राणदुःखदा (घ्राण - दुःख + दा) f. *das Niesen (der Nase Schmerzen bereitend)* BHÂVAPR. im ÇKDR.

घ्राणपाक (घ्राण + पाक) m. so v. a. नासापाक (s. d.) GAUDAP. zu SÂMKHJAK. 49.

घ्राणश्रवस् (घ्राण + श्रवस्) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge von Skanda (*der mit der Nase hört*; vgl. घ्राणचक्षुम् unter घ्राण 2. c. Oder: *durch seine Nase berühmt*) MBH. 9, 2559.

घ्रातॄ (von घ्रा) nom. ag. *der da riecht* ÇAT. Br. 14, 7, 1, 21. 2, 17. MBH. 14, 619.

घ्रातॄव्य (wie eben) adj. *zu riechen, was gerochen wird*; n. *Geruch* (obj.) ÇAT. Br. 14, 7, 1, 24. 2, 17. PRAÇNOP. 4, 8. BHARTR. 1, 7.

घ्राति (wie eben) f. 1) *Geruch* (subj.) BRH. ÂR. UP. 4, 3, 24. — 2) *das Beriechen, Riechen an*: अग्नेयमग्नयेः! M. 11, 67. — 3) *Nase* ÇABDAK. im ÇKDR.

घ्रेय (wie eben) adj. *zu riechen, riechbar, was gerochen wird, gerochen —, berochen werden darf*; n. *Geruch* (obj.) MBH. 2, 200. 12, 7076. 14, 618. 620. Suçr. 1, 38, 15. 2, 379, 11. 494, 2. BhaG. P. 7, 12, 28. — Vgl. अग्नेय.

### उ.

उ m. 1) *Sinnesobject*. — 2) *der Zug nach Sinnesobjecten* MED. n. 1. — 3) Bein. Çiva's (मैत्र) EKÂKSHARAK. im ÇKDR.

उ, उक्ते können DHÂTUR. 22, 57. — desid. जुडूषते (so ist zu lesen) P. 7, 4, 62, Sch.